# आचार्य अनन्तवीर्य

**जीवन-परिचय :** सिद्धिविनिश्चय के टीकाकार आचार्य अनन्तवीर्य न्यायशास्त्र के पारंगत थे। इनके गुरु का नाम रविभद्र है, इन्होंने स्वयं अपने को उनका 'पादोपजीवीं बतलाया है रविभद्र-पादोपजीवी । सिद्धिविनिश्चय टीका से ज्ञात होता है कि इनका दर्शनशास्त्रीय अध्ययन बहुत व्यापक और सर्वतोमुखी था। वैदिक संहिताओं, उपनिषद्, उनके भाष्य एवं वार्तिक आदि का भी इन्होंने गहरा अध्ययन किया था। न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा, चार्वाक और बौद्धदर्शन के भी ये असाधारण पण्डित थे।

अनन्तवीर्य नाम के अनेक विद्वान हैं, परन्तु सिद्धिविनिश्चय टीका के कर्ता अनन्तवीर्य ई. सन् 975 के बाद और ई. सन् 1025 के पहले किसी समय में हुए हैं। डॉ. महेन्द्रकुमार जैन के अनुसार अनन्तवीर्य की समयावधि सन् 950 से 990 तक निश्चित होती है।

**रचना-परिचय :** रविभद्र-शिष्य आचार्य अनन्तवीर्य की दो रचनाएँ हैं—

1. **सिद्धिविनिश्चयटीका :** आचार्य अनन्तवीर्य की सिद्धिविनिश्चय टीका बड़ी ही महत्त्वपूर्ण है। यह टीका अकलंकदेव के सिद्धिविनिश्चय पर लिखी गयी विशाल टीका है। अनन्तवीर्य ने अपनी इस टीका में मूल के अभिप्राय को विस्तारित किया है। अर्थ के साथ-साथ अपने द्वारा रचित श्लोकों को भी व्यक्त किया है, जिससे पाठक को दर्शनशास्त्र के इस ग्रन्थ का अध्ययन करते हुए कहीं-कहीं गद्य-पद्यमय चम्पूकाव्य का आनन्द आ जाता है।

2. **प्रमाणसंग्रहभाष्य :** इनका दूसरा ग्रन्थ प्रमाणसंग्रहभाष्य या प्रमाण-संग्रहालंकार है। यह अकलंकदेव के प्रमाणसंग्रह की टीका है। इसका उल्लेख सिद्धिविनिश्चय टीका में किया गया है।